कार्यालय, निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

कार्यालय का पता–कार्यालय निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर
दूरभाष –0151–2226551 ई मैल– aayukt.ele@gmail.com

क्रमांकः शिविरा / प्रारं / निरी / एसआईक्यूई / FLN / 19536 / 2021/2923 दिनांकः 06/12/2021

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी,
समस्त।

विषयः निपुण भारत अभियान के लक्ष्य 2026–27 के अन्तर्गत FLN के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में।

प्रसंगः रा.स्कूल.शि.प. / जय / गुणवत्ता / 2021–22 / 5911 दिनांक 30.11.2021

संदर्भः राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के पत्रांकः रा.स्कूल.शि / जय / गुणवत्ता / 2021–22 / 4572 दिनांकः 14.10.2021

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत, लेख है कि आधारभूत शिक्षण बच्चे के भावी शिक्षण की नींव है। बोध के साथ पठन, लेखन और मूलभूत गणितीय प्रश्नों को हल करने के मूलभूत कौशल को प्राप्त न कर पाने से, कक्षा–3 के बाद की पाठ्यचर्या की जटिलताओं के लिए बालक तैयार नहीं हो पाता है। मिशन का उद्देश्य एक सक्षम परिवेश का निर्माण करना है ताकि मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सार्वभौमिक अर्जन को सुनिश्चित किया जा सके। जिससे प्रत्येक बच्चा ग्रेड–3 के बाद पठन, लेखन एवं संख्या ज्ञान कौशल की अपेक्षित शिक्षण–क्षमताओं को प्राप्त कर पायेगा। FLN मिशन 3–9 वर्ष के आयु के बच्चों को अधिगम–आवश्यकताओं के लिये तैयार करना है। प्री–स्कूल एवं कक्षा–1 के बीच मजबूत सम्बन्ध स्थापित करने और सुचारू कक्षा–अन्तरण के उद्देश्य से NCERT द्वारा तैयार की गई ईसीसीई पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क को आंगनबाड़ी और प्री–प्राइमरी स्कूल दोनों द्वारा अपनाया जायेगा ताकि कक्षा–1 मे सुचारू कक्षा–अन्तरण सुनिश्चित किया जा सके। इस प्रकार अधिगम समग्र, एकीकृत, समावेशी, आनन्दमय और बच्चों को आकर्षित करने वाला होगा।

FLN मिशन शिक्षा मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है और सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय–राज्य–जिला–ब्लॉक–स्कूल स्तर पर पॉच स्तरीय क्रियान्वयन व्यवस्था की जा रही है। मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कार्यान्वयन सम्बन्धी समग्र दिशा–निर्देश, राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पहल (निपुण भारत) – मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के प्रमुख तकनीकी पहलुओं के साथ–साथ राष्ट्रीय, राज्य ,जिला, ब्लॉक, स्कूल स्तर पर क्रियान्वयन व्यवस्था को प्रभावी ढंग से स्थापित किया जाना है।

सत्र 2026–27 तक कक्षा 3 तक प्रत्येक बच्चा आधारभूत साक्षरता और संख्याज्ञान प्राप्त कर सके– यही निपुण भारत अभियान का लक्ष्य है। इसके लिए प्रत्येक जिले में Foundationa Literacy and Numeracy (FLN) अन्तर्गत दिशा निर्देशानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें। उक्त कार्य मिशन मोड में संचालित किया जाना है अतः सभी जिले

आवश्यक कार्य समयबद्ध रूप से संपादित करें। जिला निष्पादक समिति की बैठक में इस बिन्दु को शामिल करें।

नोटः–FLN के प्रभावी क्रियान्वयन एवं मॉनिटरिंग हेतु District Academic Task Force एवं Block Academic Task Force का गठन कर इस कार्यालय को अवगत कराते हुए नियमित बैठक का आयोजन भी सुचारू रूप से करावें।

संलग्नः– उपर्युक्तानुसार (दिशा निर्देश)

(अशोक सांगवा)
R.A.S.
अतिरिक्त निदेशक(प्रशासन)
प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान
बीकानेर

क्रमांकः शिविरा/प्रारं/निरी/एसआईक्यूई/FLN/19536/2021/2923 दिनांकः 06/12/2021

प्रतिलिपिः–

1. निजी सचिव, राज्य परियोजना निदेशक, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर।
2. निजी सचिव, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा/प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
3. जिला कलक्टर, समस्त।
4. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त।
5. अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा, समस्त।
6. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, समस्त।
7. कार्यालय रक्षित पत्रावली।

अतिरिक्त निदेशक(प्रशासन)
प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान
बीकानेर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

6. निष्ठा 2.0 एवं निष्ठा 3.0 की प्रगती

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल

(निपुण भारत)

राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

विवरणिका

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

NIPUN BHARAT

विवरणिका

@2021

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

प्रस्तावना

आधारभूत शिक्षण बच्चे के भावी शिक्षण का आधार है। बोध के साथ पठन, लेखन और मूलभूत गणितीय प्रश्नों को हल करने के मूलभूत कौशलों को प्राप्त न कर पाने से, बच्चा कक्षा–3 के बाद की पाठ्यचर्या जटिलताओं के लिए तैयार नहीं हो पाता है। प्रारंभिक शिक्षण की महता को देखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में उल्लेख किया गया है कि "हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक और उससे आगे सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने की होनी चाहिए। यदि हम सबसे पहले इस महत्वपूर्ण मूलभूत शिक्षण (अर्थात् प्रारंभिक स्तर पर पठन, लेखन और गणित कौशल) को प्राप्त नहीं कर पाते हैं, तो शेष नीति हमारे छात्रों की एक बड़ी संख्या के लिए मुख्य रूप से अप्रासंगिक हो जाएगी।" इस दिशा में, शिक्षा मंत्रालय (एमओई) द्वारा एक राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन की प्राथमिकता पर स्थापना की जा रही है। मिशन अधिगम के पांच क्षेत्रों–बच्चों को उनकी स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में पहुंच प्रदान करना और उन्हें स्कूलों में बनाये रखना, शिक्षक क्षमता निर्माण, उच्च गुणवत्ता एवं विविधतापूर्ण छात्र एवं शिक्षण संसाधनों / अधिगम सामग्री का विकास, अधिगम परिणाम उपलब्धि में प्रत्येक छात्र की प्रगति को ट्रैक करना तथा बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य सहित) पहलुओं के समाधान पर ध्यान देगा।

मिशन का उद्देश्य एक सक्षम परिवेश का निर्माण करना है ताकि मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सार्वभौमिक अर्जन को सुनिश्चित किया जा सके, जिससे प्रत्येक बच्चा ग्रेड–III के बाद पठन, लेखन और संख्या ज्ञान कौशल की अपेक्षित शिक्षण–क्षमताओं को प्राप्त कर ले। मिशन 3 से 9 वर्ष के आयु के बच्चों की अधिगम–आवश्यकताओं को कवर करेगा। तदनुसार, अधिगम–अंतराल और इसके संभावित कारणों की पहचान और स्थानीय परिस्थितियों एवं देश की विविधता को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न कार्यनीतियों के लिए राष्ट्रव्यापी पहल शुरू की जाएगी। इसके अलावा, प्री–स्कूल एवं कक्षा–I के बीच मजबूत संबंध स्थापित करने और सुचारू कक्षा–अंतरण के उद्देश्य से एनसीईआरटी द्वारा तैयार किए गए ईसीसीई पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क को आंगनवाड़ी और प्री–प्राइमरी स्कूल दोनों द्वारा अपनाया जाएगा ताकि कक्षा–I में सुचारू कक्षा–अंतरण सुनिश्चित किया जा सके। इस प्रकार, अधिगम समग्र, एकीकृत, समावेशी, आनंदमय और बच्चों को आकर्षित करने वाला होगा।

एफएलएन मिशन शिक्षा मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा और सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय–राज्य–जिला–ब्लॉक–स्कूल स्तर पर एक पांच–स्तरीय कार्यान्वयन व्यवस्था की जाएगी। इस पर बल देने एवं इसे प्राथमिकता देने की दृष्टि से कार्यक्रम को मिशन पद्धति में कार्यान्वित किया जाएगा। शिक्षा मंत्रालय का स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वयन एजेंसी होगा और इसकी अध्यक्षता मिशन निदेशक करेंगे। कार्यक्रम को दीर्घकालीन कार्यनीति एवं कार्य योजना को तैयार करते हुए, विशेष रूप से मिशन एवं राज्योंसंघ राज्य क्षेत्रों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों पर फोकस किया जाएगा।

मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कार्यान्वयन संबंधी समग्र दिशा–निर्देश, राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पहल (निपुण भारत)–मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के प्रमुख तकनीकी पहलुओं के साथ–साथ राष्ट्रीय, राज्य, जिला, ब्लॉक और स्कूल स्तर पर कार्यान्वयन व्यवस्था को प्रभावी ढंग से स्थापित करने के प्रशासनिक पहलुओं को कवर करते हैं। इसे कार्यान्वयन भागीदारों और क्षेत्र–विशेषज्ञों के साथ बहुत से गहन परामर्शों के माध्यम से तैयार किया गया है। इसे लचीला और सहयोगी बनाने पर भी समुचित ध्यान दिया गया है। इस प्रकार, एफएलएन पर राष्ट्रीय मिशन को मौजूदा मुख्य स्रोत अवसंरचना के प्रयोग द्वारा सुदृढ़ बनाकर कार्यान्वित किया जाएगा और यह सभी हितधारकों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से समग्र दृष्टिकोण को अपनाएगा।

Rajasthan Education Department

Rajasthan Education Department

मूलभूत साक्षरता को समझना

स्कूल शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2026–27 तक प्राथमिक स्तर पर मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की सार्वभौमिक प्राप्ति करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात को भी उजागर करती है कि इस समय प्रारंभिक स्तर पर पढ़ रहे बच्चों की बड़ी संख्या ने मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को प्राप्त नहीं किया है। एनईपी, 2020 आगे इस बात को भी दोहराती है कि इस चिंता का तत्काल समाधान जरूरी है ताकि मूलभूत शिक्षण को स्कूलों में ही पूरा किया जा सके जिससे सभी छात्रों को गुणवत्तापरक शिक्षा–प्राप्ति के अवसर मिल सके। सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मिशन बन जाना चाहिए। छात्रों को, उनके स्कूल, शिक्षकों, माता–पिता और समुदाय के साथ, सभी संभावित तरीकों से तत्काल सहायता देने और उन्हें प्रोत्साहित करने की जरूरत है ताकि सभी महत्वपूर्ण लक्ष्यों और मिशन को पूरा करने में मदद की जा सके, जो वस्तुतः पूरे भावी शिक्षण की नींव तैयार करते हैं।

राष्ट्रीय विकास में मूलभूत कौशलों की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए, "आत्मनिर्भर भारत" अभियान के तहत यह घोषणा की गई थी कि एक राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन की शुरूआत की जाएगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि 2026–27 तक देश में प्रत्येक बच्चा कक्षा–3 में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को अनिवार्य रूप से प्राप्त कर लेता है। इस प्रयोजन के लिए, एक रोमांचक पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क–बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करने वाली अधिगम सामग्री–ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों मोड में, शिक्षण परिणाम, अध्यापक क्षमता निर्माण और उनके मापन सूचकांक, मूल्यांकन विधि आदि को तैयार किया जाएगा ताकि इन्हें चरणबद्ध ढंग से आगे बढ़ाया जा सके।

इस संदर्भ में, शिक्षा मंत्रालय द्वारा "राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत)" नामक राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन की प्राथमिकता के साथ स्थापना की जा रही है। राष्ट्रीय मिशन राज्योंसंघ राज्य क्षेत्रों के लिए प्राथमिकताएं और कार्यान्वित की जाने वाली मदों को निर्धारित करता है ताकि प्रत्येक बच्चे के लिए कक्षा–3 तक मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में दक्षता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस मिशन को केंद्र प्रायोजित योजना–समग्र शिक्षा के तत्वाधान में स्थापित किया जाएगा, जो स्कूल शिक्षा के लिए एकीकृत योजना है तथा यह प्री–स्कूल से वरिष्ठ माध्यमिक स्तर को कवर करती है। यह योजना प्री–स्कूल से कक्षा–3 सहित 3 से 9 वर्ष के बच्चों पर ध्यान केंद्रित करती है। उन कक्षा–4 और कक्षा–5 के बच्चों, जिन्होंने मूलभूत कौशलों को प्राप्त नहीं किया है, को आयु अनुरूप और अनुपूरक कक्षा अधिगम सामग्री दी जाएगी ताकि आवश्यक दक्षता हासिल की जा सके।

मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान कार्यान्वयन संबंधी दिशा–निर्देश तदनुसार निम्नलिखित मुख्य पहलुओं पर ध्यान देते हैं:

1. मूलभूत भाषा और साक्षरता समझ:

पठन, लेखन और संख्यात्मक आधारभूत गणन कार्यों को करने की क्षमता भावी स्कूली शिक्षा एवं जीवनपर्यंत शिक्षण के लिए आवश्यक नींव और अपरिहार्य पूर्वापेक्षा है। भाषा का पूर्व ज्ञान भाषा में साक्षरता कौशल के निर्माण में सहायता करता है। जिन बच्चों की अपनी गृह भाषा में मजबूत पकड़ होती है वे अंग्रेजी/द्वितीय भाषा को और अधिक सरलता से सीख सकते हैं। इसके अलावा, मूलभूत साक्षरता कौशलों को स्कूल में पोषित किया जाता है और अधिकतर यह उस भाषा के प्रति अध्यापकों की समझ एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है जिस भाषा को बच्चे स्कूल में लेकर आते हैं अर्थात् जो उनकी गृह भाषा होती है। मूलभूत भाषा और साक्षरता के मुख्य घटक निम्नानुसार हैं:–

- **मौखिक भाषा विकास:** पठन एवं लेखन में कौशल विकास के लिए मौखिक भाषा अनुभव महत्वपूर्ण है।
- **पठन बोध:** यह क्षेत्र पाठ–बोध क्षमता और उससे जानकारी प्राप्त करने के साथ–साथ पाठ की व्याख्या को कवर करता है।
- **चित्रकारी की अवधारणा:** बच्चों को कौशल बोध विकास के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की चित्रकारी को देखने के अवसर देने की जरूरत है।
- **लेखन:** इस क्षेत्र में अक्षर और शब्द लेखन दक्षता के साथ–साथ अभिव्यक्ति लेखन शामिल है।
- **स्मरण शक्ति:** इस क्षेत्र में मौखिक स्मरण, लेखन/पठन स्मरण और शब्दों का रूपात्मक विश्लेषण दक्षता शामिल है।
- **ध्वनि बोध:** इस क्षेत्र में, शब्द बोध, लय बोध और शब्दों में निहित ध्वनि बोध, जो भाषा के साथ उनके अर्थ–पूर्ण संबंध से उत्पन्न होती है, शामिल हैं।
- **डिकोडिंग:** इस क्षेत्र में चित्र–बोध, अक्षर ज्ञान और डिकोडिंग तथा शब्द पहचान शामिल है।
- **निर्बाध पठन:** यह सटीकता, गति (स्वामित्व लय) अभिव्यक्ति (छंदमय) और बोध से संबंध रखता है जो बच्चों को पाठ से अर्थ जानने के अवसर देता है।
- **पठन/पठन के प्रति झुकाव की आदत:** इसमें भिन्न–भिन्न पुस्तकों और अन्य पठन सामग्रियों से जुड़ने की प्रेरणा शामिल है।

2. मूलभूत संख्या ज्ञान और गणित कौशल:

मूलभूत साक्षरता का अर्थ तर्क योग्यता और साधारण गणितीय सिद्धांतों का दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में प्रयोग से है। संख्याओं के साथ गणितीय कार्य और स्थानिक समझ किसी भी बातचीत और दैनिक जीवन के कार्यों का अभिन्न अंग है। प्रारंभिक गणित के मुख्य पहलु और घटक निम्नलिखित हैं:–

- **प्रारंभिक गिनती अवधारणा:** संख्या क्रम को गिनना और समझना
- **संख्या और संख्या संबंधी गणितीय कार्य:** गणितीय विधि में दक्षता के लिए जरूरी परंपरा को सीखना जैसे अंकों को दर्शाने के लिए मूल दशांक प्रणाली का उपयोग करना
- **आकार और स्थानिक समझ:** अपने ढंग से तीन अंकों का साधारण घटा–जोड़, भाग–गुणा (गणना) और इनका विभिन्न संदर्भों में अपने जीवन कार्यों में प्रयोग करना
- **मापन:** तीन अंकों तक जमा, घटा, गुणा और भाग करने के लिए मानक गणितीय पद्धति की समझ और उसका प्रयोग
- **पद्धति:** अंतरिक्ष और स्थानिक वस्तुओं के प्रति अपनी समझ को बढ़ाने के लिए संबंधपरक शब्दावली सीखना
- **डाटा का रखरखाव:** संख्याओं में पुनःआवर्तित आकार से लेकर पैटर्न तक साधारण पैटर्न को समझना और उसका विस्तार करना
- **गणितीय संप्रेषण:** अपने दैनिक जीवन के कार्यकलापों में साधारण डाटा/जानकारी को इकठ्ठा करना, प्रस्तुत करना और उसकी व्याख्या करना

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

3. क्षमता आधारित अधिगम परिणामों की दिशा में बढ़ना :

जब विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चे, जिनकी भिन्न–भिन्न शिक्षण आवश्यकताएं हैं, औपचारिक शिक्षण में प्रवेश करते हैं तो सभी छात्रों से उम्मीद होती है कि वे (पढ़ाए) कवर किए जाने वाले और समय–सीमित अधिगम प्रणाली में परीक्षा लिए जाने वाले ग्रेड स्तरीय कंटेंट्स के लिए तैयार हों। क्षमता आधारित शिक्षण छात्र अधिगम परिणामों पर केंद्रित है, और इसकी निम्नलिखित विशेषताएं हैं:–

- बच्चों को मौजूदा स्तर में योग्यता हासिल करने पर ही अगली कक्षा में भेजा जाए, ना कि आयु को देखकर।
- स्पष्ट और मापनीय अधिगम परिणामों को परिभाषित किया गया है जो क्षमता अर्जन का मार्ग है।
- प्राथमिक रूप से रचनात्मक मूल्यांकन का प्रयोग किया जाता है और कौशल या अवधारणा को बहुआयामी संदर्भों में मूल्यांकित किया जाता है ताकि बच्चों द्वारा गहरी समझ और अनुप्रयोग दोनों को अर्जित किया जा सके।

एनईपी 2020 में बच्चे के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विकास के विभिन्न क्षेत्र हैं जैसे शारीरिक और अंग संचालन विकास, सामाजिक–भावनात्मक विकास, साक्षरता और संख्यात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, आध्यात्मिक और नैतिक विकास, कला और सौंदर्य विकास जो परस्पर संबंधित और परस्पर आश्रित हैं। इन सभी डोमेनों को तीन प्रमुख लक्ष्यों में रखा गया है:

- **विकासात्मक लक्ष्य 1:** बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और स्वच्छता बनाए रखें
- **विकास लक्ष्य 2:** बच्चों का सम्प्रेषण प्रभावी हो
- **विकासात्मक लक्ष्य 3:** बच्चे काम से जुड़े रहने वाले शिक्षार्थी बनें और अपने निकटतम परिवेश से जुड़े रहें।

इसके अलावा, प्रत्येक लक्ष्य की प्रमुख दक्षताओं और अवधारणाओं को मुख्य रूप से दर्शाया गया है और इन दक्षताओं को एनसीईआरटी द्वारा विकसित दस्तावेजों 'प्री–स्कूल पाठ्यचर्या' और 'अधिगम परिणाम' से तैयार किया गया है। इसी तरह, एनईपी 2020 में यथापरिकल्पित गणितीय सोच, डिजाइन शिक्षण आदि के परिप्रेक्ष्य का ध्यान रखा गया है।

4. शिक्षण अधिगम: बच्चे के अधिगम पर फोकस

भारत में, हमारे पास बड़ी संख्या में बच्चे हैं जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं और उनके घरों में साक्षरता और संख्या ज्ञान का माहौल नहीं है। इसलिए शिक्षकों को ध्वनियों के बारे में शिक्षित करने और अलग अलग ध्वनियों को पहचानने और दृश्य बोध और दृश्य से जुड़ने संबंधी विकास पर ध्यान केंद्रित करना होगा, जिससे बच्चों को बेहतर पाठक और लेखक बनाया जा सकेगा। इसके अलावा, गणितीय अधिगम अथवा भावात्मक सोच की नींव खेल और गतिविधि–आधारित दृष्टि कोण (खिलौना बनाना, कला एकीकरण, खेल एकीकरण, कथावाचन आधारित शिक्षण, आईसीटी एकीकरण, समूह कार्य, भूमिका निभाना, समूहों में परियोजना कार्य आदि सहित) के माध्यम से पैदा होती है), जो हर शिक्षार्थी के लिए सार्थक हैं। इसलिए, शिक्षकों को निम्नलिखित पर ध्यान देना जरूरी है:

- समान ध्यान, सम्मान और समान अधिगम अवसर प्रदान करके बालकों और बालिकाओं की ओर से समान और उचित अपेक्षाएँ रखना।
- बिना किसी लैंगिक पक्षपात के किताबें, चित्र, पोस्टर, खिलौने/सामग्री और अन्य गतिविधियों का चयन करना।
- शिक्षार्थियों से बात करते समय या कक्षा में पढ़ाते समय लैंगिक–पक्षपात वाले कथनों का इस्तेमाल न करना।
- ऐसी कहानियों, कविताओं/गीतों, गतिविधियों और सहायक सामग्री का चयन करना जो विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों सहित लड़कियों और लड़कों को ऐसी भूमिकाओं में दर्शाती हों, जैसा सभी व्यवसायों में पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाएं रहती हैं।
- शिक्षार्थियों को उनकी ऐसी अभिरूचियों का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करना जो उन्हें आत्म–नियमन, कार्य पर दृढ़ता और अच्छी कार्य आदतों के कौशल को विकसित करने में सक्षम बनाती हैं।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

- खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र और अनुभवात्मक अधिगम का उपयोग करना। इस बात पर बल दिया जाएगा कि बच्चे आस–पास आसानी से उपलब्ध कम लागत वाली/बिना लागत वाली सामग्री के साथ खिलौने बनाएँ। बच्चों द्वारा बनाए गए खिलौनों को इकट्ठा करके इनका इस्तेमाल वाक् कौशल के लिए किया जा सकता है, जहां प्रत्येक बच्चा स्कूल में एक खिलौना लाए और फिर उसके विषय में बताए अथवा उसके बारे में लिखे।

5. अधिगम मूल्यांकनः

मूलभूत शिक्षा बुद्धि, क्षमता, शारीरिक विकास, मानसिक परिपक्वता और मूल्यों के विकास की अवधि का एक महत्वपूर्ण चरण है। मूल्यांकन का प्राथमिक उद्देश्य एफवाईएल–1 से एफवाईएल–6 (3 से 9 वर्ष की आयु वर्ग) तक प्रत्येक बच्चे को अधिगम में सहायता प्रदान करना और उनका मार्गदर्शन करना है। बुनियादी वर्षों में सीखने की गति अलग–अलग होती है और हर बच्चे में अलग अलग होती है। यह विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों/विषयों में भी अलग अलग होती है और यह हर बच्चे की प्रतिक्रिया और काम करने के तरीके पर निर्भर करती है क्योंकि इस स्तर पर अधिगम अलग अलग सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होता है। अतः मूल्यांकन की विविध तकनीकों का उपयोग करके सतत और व्यापक तरीके से बच्चों की प्रगति को ट्रैक करने के लिए मूल्यांकन जरूरी है। इसका लक्ष्य विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों सहित प्रत्येक बुनियादी स्तर अर्थात एफवाईएल–1, एफवाईएल–2, एफवाईएल–3, एफवाईएल–4, एफवाईएल–5 और एफवाईएल–6 पर अधिगम अंतरालों की शुरुआती पहचान करना है ताकि उन्हें विशेषज्ञों के पास भेजकर शीघ्र इस दिशा में कार्य शुरू करने की संभावनाएं बन सकें।

अतः विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके बच्चों की प्रगति को ट्रैक करने के लिए समग्र और उद्देश्यपूर्ण मूल्यांकन महत्वपूर्ण है जिससे निम्नलिखित में हितधारकों की सहायता की जा सके :

- बच्चे के सामर्थ्य, आवश्यकताओं, रुचियों और प्राथमिकताओं की पहचान करना।
- बच्चे के प्रदर्शन को बेहतर बनाने में और उसे पहलों के माध्यम से मजबूत बनाना।
- मुद्दों और समस्या विषयों को हल करने में सहयोग करना।
- अधिगम अंतराल और अधिगम में कठिनाइयों की शीघ्र पहचान में योगदान देना।

शिक्षा के मूलभूत वर्षों में तीन विकासात्मक लक्ष्य हैं, जिनमें 'प्रमुख शिक्षण क्षेत्र' जैसे शारीरिक और अंग विकास, सामाजिक–भावनात्मक विकास, भाषा और साक्षरता, संज्ञानात्मक विकास (गणितीय समझ और संख्या ज्ञान के साथ–साथ विश्व की समझ रखना), आध्यात्मिक और नैतिक विकास, कला और सौंदर्य विकास शामिल हैं, जो परस्पर संबंधित और एक–दूसरे पर आश्रित हैं। इसलिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके समग्र और उद्देश्यपूर्ण मूल्यांकन बच्चों की प्रगति को ट्रैक करने के लिए महत्वपूर्ण है। बच्चे में अधिकतम अधिगम और क्षमताओं के विकास करने के लिए अभिभावकों की भागीदारी भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः, मूलभूत शिक्षा के दौरान मूल्यांकन को मोटे तौर पर दो प्रमुख क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है, नामतः

(i) **स्कूल आधारित मूल्यांकन (एसबीए):** मूलभूत स्तर पर एसबीए तनाव मुक्त होना चाहिए और मुख्यतः विविध अनुभवों और गतिविधियों में बच्चे के प्रदर्शन के आधार पर गुणात्मक अवलोकन के माध्यम से होना चाहिए। मूल्यांकन के लिए विभिन्न साधनों और तकनीकों जैसे वास्तविक रिकॉर्ड, जांच सूची, पोर्टफोलियो और संवाद (शिक्षकों, साथियों, परिवार और दोस्तों के साथ पूरे 360–डिग्री मूल्यांकन के माध्यम से) का उपयोग किया जा सकता है। मूलभूत शिक्षा में प्राथमिक क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जो एक–दूसरे के साथ अंततः रूप से जुड़े होते हैं और एसबीए के माध्यम से शिक्षक द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि मूलभूत वर्षों के दौरान विकास की प्रक्रिया को सहायता दी जा सके। इन प्रमुख शिक्षण क्षेत्रों को मूलभूत शिक्षा के तीन विकासात्मक लक्ष्यों में मिला दिया गया है।

एसबीए के साधनों और तकनीकों में शामिल हैं: अवलोकन का उपयोगय स्व–मूल्यांकन और सहकर्मी

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

मूल्यांकनय और पोर्टफोलियो का उपयोग। इसके अलावा, समग्र विकास कार्ड (एचपीसी) के रूप में बच्चों की वृद्धि और विकास के सभी आवश्यक पहलुओं पर उनका मूल्यांकन संकलित किया जाना चाहिए। एचपीसी की कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- किसी विषय क्षेत्र में एकल स्कोर या लेटर ग्रेड न देकर अलग–अलग रिपोर्टिंग प्रदान करता है।
- समग्र प्रगति में अनेक अद्वितीय दक्षताओं के बारे में बताया जाता है जो केवल अकादमिक नहीं होती।
- एकाधिक शिक्षण परिणामों को साक्षरता, संख्या ज्ञान और अन्य क्षेत्रों जैसे साइकोमोटर कौशल, पर्यावरण जागरूकता, व्यक्तिगत स्वच्छता, आदि में छात्र की प्रगति को इंगित करने के लिए परिभाषित किया जाता है ताकि उनके सामर्थ्य और सुधार के क्षेत्रों की पहचान की जा सके।
- छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए पेंटिंग, ड्राइंग, क्ले–वर्क, टॉय–मेकिंग, प्रोजेक्ट्स और जांच आधारित अधिगम, छात्र पोर्टफोलियो, क्विज, समूह कार्य, रोल प्ले इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है क्योंकि ये संकेतक/अधिगम परिणाम अधिक व्यापक हैं।
- रिपोर्टिंग के लिए शिक्षक, छात्र और अभिभावकों के साथ सुविज्ञ बातचीत की जाती है।
- पूर्ण प्रगति की रिपोर्ट (360 डिग्री रिपोर्ट) करने के लिए अभिभावकों, सहपाठियों और स्व–मूल्यांकन का उपयोग किया जा सकता है।

(ii) **बड़े पैमाने पर मानकीकृत मूल्यांकन:**

राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़े पैमाने पर मूल्यांकन डाटा 'प्रणाली' पर केंद्रित है और राष्ट्र, राज्य या जिले के शैक्षिक ढांचे का वर्णन करती है। चूंकि इसमें 'प्रणालियों' के बीच तुलना शामिल है, इसलिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों और तकनीकों को मानकीकृत करने की आवश्यकता है। बड़े पैमाने पर मूल्यांकन अध्ययन करने के लिए आमतौर पर बहुविकल्पीय प्रश्न (एमसीक्यू) जैसे मूल्यांकन साधनों का उपयोग किया जाता है और लिखित उत्तरों को शामिल नहीं किया जाता ताकि प्रक्रिया को वस्तुनिष्ठ बनाया जा सके। ये मूल्यांकन यह निर्धारित करने हेतु एक तंत्र है कि अधिगम प्रक्रिया उनके राज्य, जिलों और ब्लॉकों में कितनी अच्छी तरह से हो रही है। इन अध्ययनों को 'मूल्यांकन ढांचे' को परिभाषित करके और इस स्पष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भी किया गया है कि प्रणाली का मूल्यांकन करने, इसे जवाबदेह बनाने और अधिगम स्तर में सुधार करने के लिए कार्यनीतियों को परिभाषित करने के लिए मूल्यांकन अध्ययन का उपयोग कैसे किया जाएगा। प्रणाली स्तर की तैयारियों और कार्यप्रणाली को समझने के लिए वर्ष 2021 में मूलभूत अधिगम के लिए एनएएस का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा, एनसीईआरटी द्वारा एक अध्ययन किया जाएगा जो भारत की विभिन्न भाषाओं को मौखिक रूप से धारा प्रवाह पढ़ने के साथ–साथ मूलभूत साक्षरता के लिए पहला बड़े पैमाने का मूल्यांकन और बेंच मार्किंग अध्ययन होगा। इसकी परिकल्पना मुख्य राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) 2021 के तहत एक उप–प्रणाली अध्ययन के रूप में स्थापना करने के लिए की गई है जिससे कक्षाओं में उन्नति की तुलना में अधिगम स्तरों के बारे में जानने और समझने का भी पता लगाया जा सके।

इस प्रकार, बुनियादी स्तर पर शिक्षकों को बच्चों को खेलते समय, उनको अपना कार्य करते समय, प्रदर्शन करते या आपस में बातचीत करते समय देखना चाहिए, इससे उन्हें बच्चों की अभिरूचि और सीखने से जुड़ी काफी जानकारी मिलेगी।

6. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: शिक्षक की भूमिका

बुनियादी शिक्षार्थियों को पढ़ाने वाले प्रत्येक शिक्षक के लिए यह समझना जरूरी है कि बच्चे विभिन्न तरीकों से सीखते हैं और प्रत्येक कक्षा में अलग–अलग अधिगम स्तर होते हैं, अर्थात

- बच्चे तब ज्यादा सीखते हैं जब उन्हें कक्षा में बात करने और चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अधिकांश कक्षाओं में, अधिकतर समय शिक्षक जब बात करते हैं तब बच्चे या तो एक साथ उत्तर देते हैं या चुप

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

होते हैं।

- गतिविधियों, जैसे कि मिलजुल कर दोहराना, ब्लैकबोर्ड से कॉपी करना, को बार बार मशीनी तरीके से किया जाता है और बच्चे इससे सीख नहीं पाते। बच्चे जल्दी ही अपनी रुचि खो देते हैं या अपने को अलग कर लेते हैं और उनका "कार्य ध्यान (टाइम ऑन टास्क)" कम हो जाता है। अधिकांश बच्चे शिक्षण के ज़्यादातर समय में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले पाते।
- बच्चे तब ध्यान नहीं देते यदि अधिगम प्रक्रिया में आनंद अथवा मनोरंजन का कोई भाव न हो।
- बच्चे पढ़ाई में तब रुचि नहीं लेते जब कक्षा कक्ष में पढ़ाई केवल पाठ्यपुस्तकों पर केंद्रित है और पाठ्यक्रम को पूरा करने पर ही जोर दिया जाता है और तब भी जब शिक्षण–अधिगम बच्चों के संदर्भ और वास्तविक दुनिया के अनुभवों से अलग होता है।
- शिक्षकों को उन बच्चों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करनी चाहिए जो पिछड़ रहे हैं और यह अंतराल लगातार बढ़ता जा रहा है।
- बच्चों के कौशल या अवधारणा विकास की जांच करने के लिए कंटेंट्स की बजाय परीक्षाओं सहित शिक्षण मूल्यांकन पर आधारित ध्यान देना। शिक्षण में निरंतर मूल्यांकन को एकीकृत करना चाहिए।
- बच्चे अनौपचारिक गणितीय सोच के साथ स्कूल में दाखिला लेते हैं क्योंकि वे वास्तविक जीवन में सरल समस्याओं को हल करते हैं। इसलिए, कक्षा में गणित सीखने को बच्चे के बाहरी स्कूल अनुभवों के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- ज्यादातर कक्षाओं में बहुत कम बच्चों के पढ़ने की सामग्री या टीएलएम है। प्रायः, कक्षा में प्रदर्शित वर्णमाला और संख्या चार्ट होते हैं या कक्षा की दीवारों पर चित्रित होते हैं। इस प्रकार, बच्चों को पुस्तकों या अन्य शिक्षण सामग्री के साथ जुड़ने का कोई अवसर नहीं मिलता है। शिक्षकों को कक्षा में प्रिंट–समृद्ध और खिलौना–समृद्ध वातावरण प्रदान करना होगा।

Rajasthan Education Department

शिक्षक क्षमता भी मूलभूत कौशल की प्राप्ति में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। वर्तमान में, कुछ शिक्षकों को एक बहुस्तरीय, नाटक–आधारित, सीखने की छात्र–केंद्रित शैली में प्रशिक्षित होने का अवसर मिला है, जो कि व्यापक ईसीईई अनुसंधान के अनुसार, प्रारंभिक कक्षा के छात्रों के लिए, विशेष रूप से ग्रेड 1 और 2 में बहुत महत्वपूर्ण है। स्कूल शिक्षा के चरणों में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में मौजूदा चुनौतियों को देखते हुए, एनसीईआरटी ने शिक्षक प्रशिक्षण का एक अभिनव एकीकृत कार्यक्रम तैयार किया था, जिसे अब निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) के नाम से जाना जाता है। निष्ठा मॉडल का अनुसरण करते हुए, विशिष्ट सामग्री और शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा के मूलभूत स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए प्री–स्कूल से लेकर प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं तक सतत उर्ध्व निरंतरता को कवर करते हुए एक कस्टमाइजड एफएलएन पैकेज तैयार किया जाएगा।

7. एससीईआरटी / डाइट के माध्यम से शैक्षणिक सहायता:

एफएलएन मिशन के तहत, एससीईआरटी को व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल और शिक्षकों के लिए अन्य संसाधनों को तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी, जिसमें स्थानीय भाषा भी शामिल होगी। साथ ही, ग्रेड 1 से 5 के लिए अतिरिक्त शिक्षण सामग्री, जो आकर्षक, आनंददायक और अभिनव होगी, को भी इस उद्देश्य के लिए विकसित करने की आवश्यकता होगी। दूसरी ओर, प्रत्येक डाइट विशेष रूप से एफएलएन के लिए एक शैक्षणिक संसाधन पूल बना सकता है, जिसमें के शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक, जिला शिक्षा योजनाकारों और विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग शिक्षण संस्थाओं के संकाय शामिल हैं। अतः एफएलएन मिशन के लिए एससीईआरटी और डाइट को मजबूत करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रवर्तक निम्नलिखित हैं, जिन्हें राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को प्राथमिकता पर कार्य करना होगा:

- संकाय के विकास के अवसरों और व्यावसायिक विकास के लिए व्यापक संभावना, जिसमें सेमिनार, उन्नत और मिश्रित पाठ्यक्रम और फैलोशिप, शिक्षकों की संस्थागत तैनाती और सहयोगी शिक्षण और अनुसंधान शामिल हैं।

- एससीईआरटी और डाइट की क्षमता को बढ़ाते हुए उन्हें शैक्षणिक सहायता प्रदान करने में सक्षम बनाना ताकि छात्रों के अधिगम परिणामों में सुधार किया जा सके। इसके तहत संरचित सहायता एससीईआरटी संकाय के क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की दृढ़ता और निरंतरता को सक्रिय रूप से बढ़ाकर और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ कार्य करने के लिए एससीईआरटी के लिए अवसर पैदा करके प्रदान किया जा सकता है।
- एससीईआरटी और डाइट संकाय के मार्गदर्शन के लिए राष्ट्रीय संस्थानों/विश्वविद्यालयों की पहचान करना, जहां एफएलएन विशेषज्ञों को तैयार किया जा सके।
- राज्यों के बीच और भीतर सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान–प्रदान के लिए एक्सपोजर विजिट के माध्यम से विचारों और अनुभवों को साझा करने की संस्कृति विकसित करना।
- उस क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य अध्यापक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा संस्थानों के साथ संकाय आदान–प्रदान और पारिवारिक बातचीत को सक्षम बनाया जाना चाहिए।
- संकाय की क्षमता निर्माण सुनिश्चित करना ताकि समय के साथ संकाय शिक्षक व्यावसायिक विकास और स्कूल सुधार के प्रासंगिक विषय क्षेत्रों में उपयुक्त विशेषज्ञता प्राप्त कर सकें।
- एफएलएन मिशन के लिए विशिष्ट कार्यक्रमों पर प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग की संभावनाओं का पता लगाना।
- मांग आधारित और कक्षा शिक्षण कार्यों एवं पूर्व में प्रदान किए गए प्रशिक्षणों पर किए गए शोध से सामने आई प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करके सतत व्यावसायिक विकास की अवधारणा को व्यवस्थित करना।

Rajasthan Education Department

इसके अलावा, आवश्यक शिक्षण पूर्वापेक्षा के रूप में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान पर नये सिरे से ध्यान देने के साथ बीआरसी और सीआरसी का डाइट के साथ तालमेल बिठाने और स्कूलों और शिक्षण गुणवत्ता की निगरानी करने एवं स्कूलों की सीधी सहायता हेतु कार्यक्रम बनाने के लिए उनके पर्यवेक्षण में काम करने की तत्काल आवश्यकता है। इस प्रकार, बीआरसी और सीआरसी मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन (एफएलएन) के लक्ष्य हेतु की जाने वाली गतिविधियों की प्रगति संबंधी निगरानी के लिए मुख्य एजेंसी होगी। इसके अंतर्गत, बीआरसी स्तर पर एक नोडल अधिकारी नामित किया जाएगा जो एफएलएन के संबंध में कार्यकलापों के सभी आयामों में सहायता करने वाला एवं जागरूक पर्यवेक्षक के रूप में कार्य करेगा। इसके अलावा, जो स्कूल यह मानते हैं कि उन्होंने लक्ष्यों/उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है अपने को उत्कृष्ट अधिगम समूह (पाकेट ऑफ लर्निंग एक्सीलेंस) (पीओएलई) घोषित कर सकते हैं और बीआरसी/सीआरसी और एफएलएन ब्लॉक स्तर के नोडल व्यक्ति को इस बात का सत्यापन करने और सुधार संबंधी उपाय सुझाने के लिए स्कूल का दौरा करने हेतु आंमत्रित कर सकते हैं।

8. दीक्षा– डिजिटल संसाधनों की डिपॉजटरी:

राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा छात्र–केंद्रित, परिणाम–केंद्रित शिक्षण के साथ स्थानीय भाषा/भाषाओं में अधिगम–शिक्षण ई–कंटेंट पर ध्यान केंद्रित करते हुए दीक्षा पोर्टल को नए पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क के साथ जोड़ा जाएगा। प्रौद्योगिकी के प्रति पहुंच, समानता में योगदान देगी और राष्ट्र के शिक्षण स्तर को स्तरीय बनाने में सहायता करेगी। राज्यों और संघ राज्यक्षेत्रों को प्रत्येक प्राथमिक स्कूल में प्रौद्योगिकी प्रयोग को लाने के लिए प्रयास करने की जरूरत होगी। शिक्षुओं के लिए, एनसीईआरटी द्वारा हिंदी और अंग्रेजी में गणित और पठन साक्षरता (एनसीईआरटी पाठ्यचर्या पर आधारित) के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कंटेंट्स को तैयार और दीक्षा पर अपलोड किया जाएगा और एनसीईआरटी द्वारा प्रति कक्षा प्रति विषय कम से कम 500 स्तरीय विषयों सहित इन्हें और इनके संदर्भों को स्थानीय भाषाओं में अपलोड किया जाएगा ताकि प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक विषय के अधिगम परिणामों का मापन किया जा सके जिससे प्रत्येक विषय में दक्षता के ग्रेड स्तर का मूल्यांकन किया जा सके। इसके अलावा, प्रशिक्षण मॉड्यूल्स, हैंड–आउट, वीडियो, पठन–संसाधन जैसी प्रशिक्षण सत्र के लिए सहयोगी सामग्री, प्रदर्शन हेतु शिक्षण–अधिगम सामग्री और अभ्यास एवं अनुदेशीय कार्यनीतियों का उपयोग, अध्यापक हैंड–बुक, कार्यकलाप बुकलेट्स आदि सहित विभिन्न अध्यापक प्रशिक्षण संसाधन उपलब्ध करवाए जाएंगे। एनसीईआरटी इसी सामग्री

को स्थानीय भाषा और उसके संदर्भ में तैयार करेगी। इसके अलावा, अध्यापकों के लिए डिजिटल पाठ–योजना के लिए दीक्षा का प्रयोग किया जाएगा। अध्यापकों द्वारा दीक्षा मोबाइल ऐप्स के जरिए पाठ–योजनाओं को सरलता से एक्सेस किया जा सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि पाठ गतिविधि आधारित हों और इनमें ऐसे उदाहरण हो जिन्हें बच्चे अन्य चीजों के साथ जोड़ सकें।

9. अभिभावक और सामुदायिक सहभागिता:

सामुदायिक भागीदारी एफएलएन मिशन के कार्य की योजना, कार्यान्वयन और निगरानी में एक केंद्रीय और व्यापक कारक होगा। एफएलएन पर राष्ट्रीय मिशन समुदाय, माता–पिता, शिक्षकों और बच्चों की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में कार्य करेगा। इस तरह के बड़े पैमाने पर जुटने और सक्रिय भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए, राज्य और जिला एफएलएन पीएमयू/कार्यालयों को अनुभवी और सक्रिय सिविल सोसायटी संगठनों के साथ हाथ मिलाना होगा।

कोविड–19 महामारी के दौरान यह भी पाया गया है कि जब स्कूल बंद होते है, तब सभी बच्चों में से लगभग तीन चौथाई को परिवार के सदस्यों से कुछ न कुछ सीखने को मिला। विशेष रूप से, यहाँ तक कि उन बच्चों में भी जिनके ना तो माता–पिता किसी ने भी प्राथमिक विद्यालय से आगे की पढ़ाई की है, परिवार के सदस्यों ने सहायता प्रदान की है। इन घरों में बच्चों को सीखने में सहायता करने में बड़े भाई–बहनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार, एफएलएन मिशन सभी स्तरों पर उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देकर सफल हो सकता है इस प्रकार घरों और समुदायों को स्कूल आधारित शिक्षा के विस्तार के रूप में कार्य करने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है। इस जुड़ाव को बनाए रखने के लिए, सरकारी और निजी स्कूलों, स्थानीय निर्वाचित निकायों, गांव, माता–पिता और बच्चे सहित इस पारिस्थितिकी तंत्र में प्रत्येक हितधारक की भागीदारी के साथ नियमित आवृत्ति पर कई तरह के कार्यक्रमों की योजना बनाई जा सकती है। माता–पिता की सहभागिता बनाने के लिए चिह्नित कुछ महत्वपूर्ण तरीके इस प्रकार हैं:

- **माताओं के समूह:** प्रत्येक ग्रेड के लिए, प्रत्येक बस्ती या मौहल्ले में, माताओं के समूह का गठन उन बच्चों के लिए किया जा सकता है जो मूलभूत अवस्था में हैं। ये समूह समय–समय पर बच्चों के साथ–साथ विभिन्न शिक्षण गतिविधियों (बुनियादी पठन और अंकगणितीय गतिविधियों) को पूरा करने के लिए समय–समय पर मिल सकते हैं। उनके पास एक मंच भी है जिस पर शिक्षक या आंगनवाड़ी कार्यकर्ता संपर्क बनाने के लिए समुदाय को मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

- **छात्रों का सुचारु कक्षा–अंतरण:** कक्षा–I में प्रवेश से पहले महीनों में आंगनवाड़ियों/प्री–स्कूल से कक्षा–I में सुचारु कक्षा अंतरण सुनिश्चित करने के लिए, आंगनवाड़ी शिक्षक और कक्षा–I शिक्षक को एक दूसरे के स्थान पर मिलना और जाना चाहिए। यदि संभव हो, तो आने वाले महीनों में कक्षा–I में प्रवेश करने वाले सभी बच्चे कक्षा–I के स्कूल में नामांकन से कुछ महीने पहले जा सकते हैं। सहयोग के लिए आंगनवाड़ी शिक्षा और कक्षा–I शिक्षक के लिए सुझाए गए दिशानिर्देशों को राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों और एससीईआरटी द्वारा रेखांकित किया जा सकता है।

- **पीआरआई (पंचायती राज संस्थाएं) की भूमिका:** पीआरआई माता–पिता और समुदाय के बीच जागरूकता पैदा करने में एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं। ब्लॉक स्तर पर, इच्छुक सरपंच/वार्ड सदस्य एफएलएन कार्यक्रम आयोजित करने अर्थात एक साथ पढ़ना, एक साथ सीखना और विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने के लिए एफएलएन नोडल व्यक्ति से संपर्क कर सकते हैं।

- **इसके अतिरिक्त, समुदाय बच्चों को एफएलएन के भाग के रूप में नई चीजें सीखने में सहायता कर सकता है:**
    - स्कूलों/चौपाल में बच्चों को कहानियाँ सुनाना और बताना, जहाँ दादा–दादी और युवा इसमें सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।
    - विभिन्न प्रकार के कौशल और कार्य (एक्सपोजर) के संबंध में बच्चों को उन्मुख करना: बढ़ई, दुकानदार, दर्जी, डॉक्टर आदि) गाँव में बच्चों को अपने पास बुला सकते हैं या उन्हें संबोधित कर सकते हैं और

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

समझा सकते हैं कि वे क्या करते हैं।

इसके अतिरिक्त, बेहतर अधिगम परिणामों की ओर ध्यान केंद्रित करने के लिए, समुदायों और अभिभावकों को बच्चों के अधिगम स्तर से अवगत कराना चाहिए। यह बच्चों के अधिगम स्तर के बारे में माता–पिता और शिक्षकों के बीच एक स्वस्थ बातचीत शुरू करने की दिशा में एक कदम हो सकता है। इस दिशा में, सभी स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए एक सामुदायिक जागरूकता मेला का आयोजन वार्षिक रूप से राष्ट्रीय एफएलएन सप्ताह के दौरान या किसी अन्य तारीख को आयोजित किया जा सकता है, जैसा कि राज्य द्वारा तय किया जाता है। इसके अतिरिक्त, सभी माता–पिता को बच्चों को घर आधारित शिक्षण सहायता प्रदान करने में सक्षम बनाने के लिए, प्रौद्योगिकी आधारित और व्यक्तिगत मॉडल को शुरू किया जा सकता है। प्रत्येक घर को आसानी से की जाने वाली मजेदार गतिविधियां करने के लिए और कार्य पुस्तिकाएँ प्रदान की जा सकती हैं। नियमित रूप से उनके जुड़ाव को सुनिश्चित करने के लिए, पूर्व–रिकॉर्ड किए गए कॉल और वीडियो के माध्यम से स्वचालित अनुस्मारक और निर्देश माता–पिता को भी भेजे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एसएमसी/एसडीएमसी द्वारा सामुदायिक स्तर की सहायता नियमित रूप से माता–पिता को प्रदान की जा सकती है।

10. स्कूल की तैयारी/स्कूल तैयारी मॉड्यूलः

स्कूल की तत्परता शिक्षा की पहुंच में गुणवत्ता और समता सुनिश्चित करने के साथ–साथ अधिगम परिणामों में सुधार करने का आधार है। स्कूल की तत्परता के लिए एक सरल परिभाषा यह हो सकती है कि एक बच्चा जो स्कूल के लिए तैयार है उसके पास विभिन्न प्रकार के डोमेन में बुनियादी न्यूनतम कौशल और ज्ञान हों जो उसे स्कूल में सफल होने में सक्षम बनाते हैं। राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) पाठ्यचर्या की रूपरेखा, जो कि महिला और बाल विकास मंत्रालय (एमडबल्यूसीडी) द्वारा विकसित है, ने स्पष्ट किया है कि "बच्चों, स्कूलों और परिवारों को तब तैयार माना जाता है जब वे अन्य आयामों के साथ इंटरफेस करने के लिए आवश्यक दक्षता और कौशल प्राप्त कर लेते हैं और घर से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) केंद्र तथा बाद में प्राथमिक स्कूल में बच्चों के सुचारू रूप से पारगमन का समर्थन करें।''

एनईपी–2020 ने एनसीईआरटी द्वारा पहली ग्रेड के सभी छात्रों के लिए '3 महीने के खेल–आधारित 'स्कूल तैयारी मॉड्यूल' के विकास की सिफारिश की है, जो कि एक अंतरिम उपाय के रूप में यह सुनिश्चित करने के लिए है कि सभी बच्चे स्कूल के लिए तैयार हों जब तक कि गुणवत्तापूर्ण पूर्वस्कूली शिक्षा का सार्वभौमिक प्रावधान प्राप्त न हो जाए। स्कूल तैयारी मॉड्यूल (एसपीएम) अनिवार्यतः लगभग 12 सप्ताह का हो जिसमें पहली कक्षा की शुरुआत में बाल विकास अनुरूप अनुदेश हो और जिसे बच्चे की पूर्व–साक्षरता, पूर्व–संख्या ज्ञान, संज्ञानात्मक और सामाजिक कौशल को सशक्त बनाने के लिए तैयार किया गया हो। यह उम्मीद की जाती है कि इस मॉड्यूल में अक्षरों, ध्वनियों, शब्दों, रंगों, आकृतियों और संख्याओं के बारे में सीखने संबंधी गतिविधियाँ और कार्यपुस्तिकाएँ शामिल होंगी और साथियों और माता–पिता का सहयोग सम्मिलित होगा। तदनुसार, एनसीईआरटी ने 3 महीने का खेल आधारित 'स्कूल तैयारी मॉड्यूल' विकसित किया है जिसे राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा उनकी आवश्यकता अनुसार अपनाया जा सकता है। एनईपी 2020 की परिकल्पना के अनुसार, समग्र शिक्षा यह भी प्राथमिकता देगी कि 5 वर्ष की आयु से पूर्व हर बच्चा एक ''प्रिपेरेटरी कक्षा'' या ''बालवाटिका'' (अर्थात कक्षा 1 से पहले) में जा सकेगा। इन प्रिपेरेटरी कक्षाओं में अधिगम मुख्य रूप से खेल–आधारित शिक्षा पर आधारित होना चाहिए, जिसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक, और मनोप्रेरक क्षमताओं के विकास और प्रारंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया हो।

11. राष्ट्रीय मिशन–पहलु और दृष्टिकोणः

राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का उद्देश्य वर्ष 2026–27 तक प्राथमिक कक्षाओं में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना है और यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे ग्रेड III तक पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान में ग्रेड स्तर की योग्यता प्राप्त करें। एनईपी 2020 की सिफारिशों पर आधारित प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- खेल, खोज और गतिविधि–आधारित शिक्षण को शामिल करके एक समावेशी कक्षा का वातावरण सुनिश्चित

करना, इसे बच्चों की दैनिक जीवन से संबंधित स्थितियों से जोड़ना और बच्चों की मातृ भाषाओं का औपचारिक समावेश करना।

- बच्चों को प्रेरित, आत्मनिर्भर और एकाग्रचित पाठक और लेखक बनाना जिनमें सतत पठन एवं लेखन संबंधी कौशलों की समझ विकसित हो।
- बच्चों को संख्या, माप और आकार संबंधी तर्क समझने के योग्य बनाना और उन्हें संख्या ज्ञान और स्थानीय समझ कौशल के माध्यम से समस्या को हल करने में आत्मनिर्भर होने के लिए सक्षम बनाना।
- बच्चों की परिचित/घरेलू/मातृ भाषाओं में उच्च गुणवत्ता और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना।
- शिक्षकों, मुख्य शिक्षकों, शैक्षणिक संसाधन व्यक्तियों और शिक्षा प्रशासकों के निरंतर क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना।
- आजीवन सीखने की एक मजबूत नींव बनाने के लिए सभी हितधारकों अर्थात शिक्षकों, माता–पिता, छात्रों और समुदाय, नीति निर्माताओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना।
- विभागों, समूह और सहयोगी कार्य, परियोजना कार्य, प्रश्नोत्तरी, रोल प्ले, खेल, मौखिक प्रस्तुतियों, लघु परीक्षणों आदि के माध्यम से 'के रूप में और के लिए' मूल्यांकन सुनिश्चित करना।
- सभी छात्रों के सीखने के स्तर की ट्रेकिंग सुनिश्चित करना।

मूलभूत शिक्षा पर जोर देने और उसको प्राथमिकता देने के लिए, मौजूदा मुख्यधारा की संरचनाओं के उपयोग और उसके सुदृढ़ीकरण के साथ इस कार्यक्रम को मिशन मोड में लागू किया जाएगा। स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वयन एजेंसी होगी और इसके अध्यक्ष मिशन निदेशक होंगे।

12. मिशन की रणनीतिक योजना:

राष्ट्रीय स्तर पर मिशन 2026–27 तक राष्ट्रीय और राज्य–स्तरीय लक्ष्य निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार होगा, स्वतंत्र रूप से उनके खिलाफ प्रगति को मापना, समग्र शिक्षा के तहत राज्यों को धन उपलब्ध कराना और सार्वजनिक वस्तुओं और संसाधनों के निर्माण सहित राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को तकनीकी और सलाहकार सहायता प्रदान करना। अपने संबंधित एफएलएन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बहु–वर्षीय कार्य योजना बनाने की जिम्मेदारी राज्यों की होगी, और वर्ष 2026–27 तक ग्रेड III तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयुक्त भागीदारों की पहचान सुनिश्चित करना और उनके साथ काम करना। रणनीतिक योजना में मिशन के लिए निम्नलिखित व्यापक केन्द्रित क्षेत्र शामिल होंगे:

- **लक्ष्य स्थापना:** राष्ट्रीय मिशन सीखने के परिणामों को प्राप्त करने हेतु समग्र राष्ट्रीय लक्ष्य घोषित करेगा, जिसमें वर्ष 2026–27 तक प्रत्येक राज्य/संघ राज्य क्षेत्र द्वारा प्राप्त किए जाने वाले वर्षवार परिणाम भी शामिल होंगे। मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए समग्र साक्षरता और संख्यात्मक लक्ष्य को मूलभूत साक्षारता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य के रूप में स्थापित किया जाता है जो कि बालवाटिका से शुरू होते हैं।
- **शैक्षणिक पहलू और पाठ्यक्रम:** नए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बहुभाषावाद को मजबूत करने, नवीन शिक्षणशास्र का उपयोग, शिक्षण अधिगम सामग्री की विविधता, बुनियादी वर्षों में मातृभाषा में शिक्षण–अधिगम के लिए मार्ग प्रशस्त करना, शिक्षा में प्रौद्योगिकी और भारतीय नैतिकता, भाषाओं, कला और संस्कृति में निहित पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को शामिल करना, जो शिक्षार्थियों को स्वदेशी ज्ञान, अनुभव, कौशल और साहस के साथ 21 वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करेगी।
- **क्षमता निर्माण:** क्षमता निर्माण का उद्देश्य शिक्षक के नेतृत्व वाली प्रक्रिया से ध्यान हटाकर शिक्षार्थी के नेतृत्व वाली गतिविधि और अनुभव–आधारित अधिगम प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करना होगा, जहां अवधारणाओं और विषयों का

सीखना केवल तभी पूरा माना जाएगा, जब शिक्षार्थी वास्तविक जीवन की स्थितियों में समस्याओं को हल करने के लिए इनके अनुप्रयोग को प्रदर्शित करने में सक्षम हो।

- **शिक्षण अधिगम सामाग्री और कक्षा अभ्यास:** मुख्य शिक्षण सामग्री (अर्थात अधिगम परिणामों से जुड़ी पाठ्यपुस्तकें), के अलावा एनसीईआरटी, सीबीएसई, केवीएस और एससीईआरटी द्वारा बुनियादी स्तर के लिए अत्यधिक आकर्षक, आनंदपूर्ण और नवीन अतिरिक्त अधिगम संसाधनों का विकास किया जाना।

- **अधिगम मूल्यांकन:** छात्रों की प्रगति और उपलब्धियों का मूल्यांकन स्कूलों और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा निम्नलिखित स्तरों पर होगा:

  - स्कूल आधारित मूल्यांकन
  - बड़े पैमाने पर मूल्यांकन (एनएएस, एसएएस और तृतीय पक्ष मूल्यांकन सहित)
  - हितधारकों की नियोजनीयता और आईईसी: बृहत्तर जागरूकता पैदा करने और समुदाय का समर्थन हासिल करने के लिए, निम्नलिखित को दूसरों के बीच किए जाने की आवश्यकता होगी:
  - एफएलएन की आवश्यकता, अधिगम के परिणामों और लक्ष्यों पर आलेख जानकारी।
  - स्कूल से अभिभावक के लिए संचार सामग्री, राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों से शिक्षकों/स्कूलों के लिए संचार सामग्री, आदि।
  - सभी हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग करना।

- **मजबूत आईटी प्रणाली:**

  बड़े डेटा एनालिटिक्स के साथ एक मजबूत आईटी (सूचना प्रौद्योगिकी) प्रणाली मिशन का एक अभिन्न हिस्सा होगा। आईटी प्रणाली के डिजाइन में तीन घटक होंगे अर्थात राष्ट्रीय और राज्यफ/संघ राज्य क्षेत्र स्तर परय राज्य/संघ राज्य क्षेत्र स्तर से नीचे की ओर स्कूल स्तर तकय और स्कूल स्तर पर–मूल्यांकन के लिए एक उपकरण के रूप में आईटी।

  इसके अलावा, आलोचनावादी समर्थक के रूप में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा पूर्वाक्षेओं के रूप में प्रशासनिक सुधार किए जाने की आवश्यकता है ताकि बुनियादी चरण के लिए परिकल्पित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। वंचित या सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूह (एसईडीजी) क्षेत्रों, विशेष शिक्षा क्षेत्रों (एसईजेड) और आकांक्षी जिलों में शिक्षकों की उपलब्धता पर विशेष जोर दिया जाएगा। इसके अलावा, इस मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में राज्य/जिलों/ब्लॉकों के प्रदर्शन को मापा जाएगा और इसे प्रोत्साहन के साथ जोड़ा जाएगा।

13. मिशन कार्यान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका:

- **स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय:** यह विभाग राष्ट्रीय स्तर पर एफएलएन मिशन की कार्यान्वयन एजेंसी होगा। समग्र शिक्षा योजना के तहत यह विभाग राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को वित्तीय सहायता भी प्रदान करेगा।

- **राज्य और संघ राज्य क्षेत्र:** मिशन मोड में, 2026–27 तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियां सुनिश्चित करने की जरूरत है:

  - संबंधित एफएलएन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बहु–वर्षीय कार्य योजना बनाना।
  - वार्षिक लक्ष्यों पर काम करना और वार्षिक प्रगति के मापन के लिए केंद्रीय स्तर पर विकसित किए गए उपकरणों के अनुकूल होना।
  - एनएएस में पहचान किये गए अंतरालों के आधार पर राज्य विशिष्ट चरण–वार कार्य योजना तैयार करके राष्ट्रीय मिशन को प्रासंगिक बनाना।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

- प्री–प्राइमरी से लेकर ग्रेड 3 तक प्रत्येक स्कूल में प्रत्येक कक्षा में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना और मिशन मोड में एफएलएन को लागू करने के लिए शिक्षकों का व्यापक क्षमता निर्माण करना।
- बुनियादी ग्रेड में नामांकित प्रत्येक बच्चे के डेटाबेस की मैपिंग।
- आवश्यकताओं की मैपिंग और मूलभूत सुविधाओं की सुनिश्चितता।
- शैक्षणिक सत्र की शुरुआत से पहले छात्रों को पाठ्य पुस्तकों और वर्दी का वितरण सुनिश्चित करना।
- शिक्षकों को अकादमिक सहायता प्रदान करने के लिए परामर्शदाताओं के समूह की पहचान करना
- स्कूल / सार्वजनिक पुस्तकालयों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाया जाएगा।
- एसएमसी सदस्यों को प्रशिक्षण, अधिगम परिणाम के वांछित स्तर को समझाने के लिए अभिभावकों और समुदाय के लिए जागरूकता अभियान।

Rajasthan Education Department

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी): एनसीईआरटी मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को प्राप्त करने के इस राष्ट्रीय उद्देश्य को पूरा करने और प्राप्त करने में निम्नलिखित गतिविधियों के संचालन के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा:
  - ईसीई ढांचे के लिए एक निरंतरता के रूप में, मूलभूत चरण के लिए विशेषज्ञों के सहयोग से शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षण के साथ एफएलएन पर ध्यान केंद्रित करते हुए पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढांचा विकसित करना।
  - बुनियादी चरण के शिक्षकों के लिए एक विशेष क्षमता निर्माण पैकेज तैयार करना और उपयुक्त अधिगम संवर्धन कार्यक्रम विकसित करना।
  - आकलन के माध्यम से अंतराल का विश्लेषण करना और मूलभूत अधिगम को प्राथमिकता देने के लिए उपकरण और सूचकांक विकसित करना।

सत्यमेव जयते

  - ग्रेड–I में प्रवेश करने वाले छात्रों के लिए 3 महीने का खेल–आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल विकसित करना ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ग्रेड –1 में स्कूल में शामिल होने वाले सभी छात्र स्कूल जाने के लिए तैयार हैं।
- **केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई):** सीबीएसई बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान संबंधी अधिगम परिणाम मैट्रिक्स का पालन करते हुए सीबीएसई से संबद्ध स्कूलों में क्षमता–आधारित शिक्षा अवधारणा को शामिल करेगा, साथ ही इसकी निगरानी करेगा और स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग को सूचित भी करेगा। यह प्राथमिक स्तर के लिए अधिगम परिणाम हेतु कोडीकरण और मैट्रिक्स विकसित करने के लिए एनसीईआरटी के साथ भी कार्य करेगा और बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान के लिए ईसीसीई और प्राथमिक शिक्षकों के क्षमता निर्माण में केन्द्रीय भूमिका भी निभाएगा।
- **केंद्रीय विद्यालय संगठन (केविएस):** केविएस स्कूलों को मिशन मोड में ग्रेड 3 तक सभी छात्रों द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान ज्ञान प्राप्त करने हेतु मॉडल स्कूलों के रूप में विकसित किया जाएगा। इसे सुचारु बनाने हेतु, प्राथमिक स्तर पर क्षमता–आधारित शिक्षा का समावेश करने और सीबीएसई और एनसीईआरटी द्वारा विकसित किए गए अधिगम परिणाम मैट्रिक्स को अपनाने में केविएस अग्रणी भूमिका में होंगे।
- **राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी):** एससीईआरटी को पाठ्यक्रम की डिजाइनिंग और विकास / अनुकूलन, अनुदेशात्मक डिजाइन, शिक्षकों और शैक्षणिक संसाधन व्यक्तियों की क्षमता निर्माण, स्थानीय स्तर पर प्रासंगिक शिक्षण अधिगम सामग्री विकसित करने, शिक्षकों के व्यापक क्षमता निर्माण, शिक्षकों के लिए स्थानीय भाषा में प्रशिक्षण मॉड्यूल और अन्य संसाधनों के विकास का उत्तरदायित्व सौंपा जाएगा।

इसके अतिरिक्त, बुनियादी चरण के लिए अतिरिक्त अधिगम सामग्री, जो समावेशी, रुचिकर और नूतन है, को स्थानीय विशेषज्ञों को शामिल करके स्थानीय संदर्भ पर विशेष जोर देते हुए विकसित करने की भी आवश्यकता होगी।

- **जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट):** जिला स्तर पर जिला–विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु सुचारु ढंग से कार्य करने की सुगमता के साथ स्वायत्त संस्थाओं के रूप में उभरने के लिए डाइट को प्रोत्साहित किया जाना है। इसके तहत, प्रत्येक डाइट एफएलएन के लिए विशेष रूप से एक शैक्षणिक संसाधन पूल विकसित कर सकता है, जिसमें शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक, जिला शिक्षा नियोजक और विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग के संकाय शामिल हों।

- **जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) और खंड शिक्षा अधिकारी (बीईओ):** एफएलएन मिशन के तहत डीईओ और बीईओ की प्रमुख भूमिका, संबंधित राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन द्वारा स्कूलों को प्रदान किए गए निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों, यूनिफॉर्म, शिक्षण अधिगम सामग्री और किसी भी अन्य संसाधनों का समय पर वितरण सुनिश्चित करना है। इसके अलावा, डीईओ और बीईओ, एफएलएन संबंधी विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का ध्यान रखेंगे और अपने अधिकार क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षकों का क्षमता निर्माण सुनिश्चित करेंगे।

- **ब्लॉक संसाधन केंद्र (बीआरसी) और क्लस्टर संसाधन केंद्र (सीआरसी):** ब्लॉक और क्लस्टर स्तर पर एफएलएन मिशन के लक्ष्यों की तुलना में क्रियाकलापों की प्रगति की निगरानी और पर्यवेक्षण के लिए बीआरसी और सीआरसी दोनों प्रमुख एजेंसी होंगी। परिणामतः वे एफएलएन के लिए एक व्यापक गुणवत्ता सुधार योजना तैयार कर सकते हैं।

- **मुख्य शिक्षक और शिक्षक:** सभी बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम शिक्षकों की व्यापक क्षमता निर्माण करना होगा। परिणामस्वरूप मुख्य शिक्षकों को शिक्षाशास्त्र के नेतृत्वकर्ताओं के रूप में नेतृत्व करने की आवश्यकता होगी, जबकि शिक्षकों को अपने प्रत्येक ग्रेड/विषयों में अपनी कक्षा–कक्ष शिक्षण के माध्यम से प्राप्त किए जाने वाले अधिगम परिणामों के बारे में स्पष्ट होने की आवश्यकता होगी।

- **गैर–सरकारी संगठन (एनजीओ)/सिविल सोसाइटी संगठन (सीएसओ):** अपने संबंधित एफएलएन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को एनजीओ/सीएसओ के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा जो बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान में विशेषज्ञता रखते हों। निम्नलिखित कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिसमें गैर–सरकारी संगठन और अन्य सिविल सोसाइटी संगठन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं:
    - क्षमता निर्माण और संसाधनों का विकास
    - सतत गतिशीलता और जागरूकता सृजन
    - समुदाय भागीदारी सहित सामाजिक लेखा परीक्षा की प्रक्रिया की सुविधा प्रदान करना

- **स्कूल प्रबंधन समितियां (एसएमसी), समुदाय और अभिभावक:** शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एसएमसी, समुदाय और माता–पिता की सक्रिय भागीदारी से पूरे स्कूल की शिक्षा प्रणाली में जवाबदेही और स्थायित्व के बहु–वांछित घटक को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा, माता–पिता और समुदाय की भूमिका यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होगी कि बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं और उनके घर का वातावरण बच्चों को विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से उनके अधिगम में प्रगति के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

- **स्वयंसेवक:** राज्य और संघ राज्य क्षेत्र वर्ष 2026–27 तक सभी ग्रेड 3 छात्रों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को प्राप्त करने के लक्ष्य के लिए योगदान करने में पीयर समूहों और अन्य स्थानीय स्वयंसेवकों को जोड़ने के लिए अपने स्वयं के दिशानिर्देश तैयार करेंगे।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

- **निजी स्कूलः** यह और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है कि निजी स्कूल मुख्य चरण मूल्यांकन में भाग लेते हैं जो बुनियादी दक्षताओं और अवधारणाओं के अनुप्रयोग की जांच करते हैं। इसी तरह, निजी स्कूलों को बुनियादी अधिगम के महत्व पर जागरूकता बढ़ाने और बच्चों के अधिगम परिणामों पर इसके प्रभाव के प्रति लक्षित संचार में निजी स्कूलों को शामिल करना भी आवश्यक होगा।

14. निगरानी और सूचना प्रौद्योगिकी ढांचा :

- यह मिशन राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर और जिला स्तर पर आईटी आधारित समाधानों के माध्यम से मिशन की गतिविधियों की निगरानी करेगा जिसमें क्षेत्र स्तर पर प्रत्येक बच्चों की निगरानी शामिल होगी। प्रस्तावित निगरानी ढांचा अनिवार्य रूप से दो प्रकार का होगाः वार्षिक निगरानी सर्वेक्षण और समवर्ती निगरानी। इसके अलावा, एफएलएन के लिए प्राथमिकताएं लक्ष्यों में उल्लिखित हैं और इन्हें दीक्षा और यूडाइस़ जैसे मौजूदा भवन ब्लॉकों का लाभ उठाकर प्राप्त किया जा सकता है, जिसे पंजीकरणों और पहचान के लिए ओपन सोर्स टूल्स और समाधानों का लाभ उठाकर संवर्धित किया जा सकता है, जबकि साथ ही साथ निम्नलिखित के अनुसार एनडीईएआर द्वारा निर्धारित सिद्धांत और मानकों का पालन किया जाएगाः
- मौजूदा मॉड्यूलस का मूल्यांकन किया जा सकता है, जिसे एफएलएन के लिए अपग्रेड और लाभप्रद बनाया जा सकता है।
- एनडीईएआर सिद्धांतों का अनुपालन करने हेतु अनुपस्थित आवश्यक बिल्डिंग ब्लॉक्स को नीतिगत लक्ष्यों के लिए विकसित किया जा सकता है।
- एमओई के नेतृत्व में एनडीईएआर संस्थागत ढांचा उन क्षेत्रों की पहचान कर सकता है जहां उपरोक्त नीति लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मानकों, विशिष्टताओं और नीतियों का पालन करने की आवश्यकता है।

एफएलएन डेटा संग्रह और मापन के लिए फ्रेमवर्क और वास्तुकला से विशेष संग्रह अभियान, विभिन्न प्रणालियों से डेटा संग्रह, सिंक्रनाइजेशन, मैनुअल अपलोडिंग आदि की आवश्यकता के बिना कई स्रोतों से एवं अलग–अलग मात्रा और विभिन्न जगहों तथा स्तरों पर स्वचालित डेटा संग्रह और मिलान सक्षम होना चाहिए।

15. मिशन की स्थिरता :

स्थायी और सफल सरकारी कार्यक्रमों जैसे, पोलियो उन्मूलन और स्वच्छ भारत मिशन, से एफएलएन मिशन के लिए कुछ प्रमुख अंतर्दृष्टिः

- नेतृत्व को शामिल किया जाना महत्वपूर्ण है। निगरानी गतिविधियों में पीएमओ, सीएम, शिक्षा सचिवों और जिला कलेक्टरों के शामिल होने से सावधानी और प्राथमिकता बढ़ती है। निरंतर निगरानी और स्वामित्व की आवश्यकता होती है।
- पूर्ण पहुँच के लिए, स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध व्यक्तियों को जोड़ते हुए सामुदायिक स्तर पर इन्फ्लुएंसर मैपिंग आवश्यक है।
- बहुत ही प्राथमिक स्तर पर आउटकम ट्रैकिंग और मेजरमेंट से संवेदनशील क्षेत्रों के संबंध में स्पष्टता, लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मैप डिस्टेन्स की क्षमता और लक्ष्य प्राप्ति के लिए नवाचार आता है।
- सहज और आसानी से समझे जाने वाले लक्ष्य के प्रति विस्तृत समझ पर विशेष ध्यान।
- प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, जिला मैजिस्ट्रेट और "ग्राम प्रेरक" स्तरों से प्रत्येक स्तर पर उच्च स्तरीय और अत्यधिक योग्य निगरानी प्रणाली।
- मुख्य स्टेकहोल्डरों के प्रयासों को पहचानने का महत्व।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

इसके अतिरिक्त, यह सुनिश्चित करना कि मिशन का लक्ष्य एक समयबद्ध ढ़ंग से प्राप्त किया जाए और यह स्थायी हो, आने वाली मुख्य समस्याओं और चुनौतियों को चिन्हित करना विवेकपूर्ण होगा। राज्यों को व्यापक राष्ट्रीय एफएलएन मिशन फ्रेमवर्क को अपनाने और संदर्भित करने के लिए लचीलापन और अवसर दिया जाना होगा। शिक्षा मंत्रालय की भूमिका मिशन के लक्ष्यों को स्पष्टतः परिभाषित करने, उन्हें राज्यों के लिए जिम्मेदार बनाने, और उन्हें आवश्यक उपकरणों के साथ प्रदान करने, तकनीकी सहायता और निधियन के संबंध में महत्वपूर्ण होगा। इसलिए, शिक्षा मंत्रालय को अंतर–मंत्रालयी समन्वय और सहयोग सुनिश्चित करने के उपायों पर भी विचार करना होगा।

16. अनुसंधान, मूल्यांकन और दस्तावेजीकरण के लिए आवश्यकता :

राष्ट्रीय, राज्य, जिला स्तर पर अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन प्रारंभ किए जाएंगे और विभिन्न स्तरों पर बुनियादी अधिगमों के विभिन्न पहलुओं के क्रियान्वयन में आने वाले मुद्दों और समस्याओं के बारे में गहन दृष्टिकोण प्रदान करने हेतु कार्रवाई अनुसंधान के रूप में ब्लॉक, क्लस्टर और स्कूल स्तर पर भी आयोजित किए जा सकते हैं। राज्य स्तर और जिला स्तर पर अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का निर्धारण उन स्तरों पर संसाधन समूहों या अनुसंधान सलाहकार समितियों द्वारा किया जाना चाहिए।

इस संबंध में, राज्यों को गुणवत्ता संबंधी परिणामों जैसे छात्रों के अधिगम परिणामों, शैक्षिक–निष्पादन, लैंगिक और सामाजिक वर्गों द्वारा छात्र और शिक्षक उपस्थिति दर, कक्षाकक्ष में अधिगमय कक्षा कार्यव्यवहारों में परिवर्तन को जाँचने के लिए मानकों के रूप में भी, शिक्षक प्रशिक्षण का प्रभाव, पाठ्यपुस्तकों और पाठ्य–सामग्री की प्रभावकारिता, बच्चों की भाषाओं का उपयोग, बीआरसी/सीआरसी/डाइट द्वारा प्रदान की गई शैक्षणिक पर्यवेक्षण की गुणवत्ता आदि को मापने हेतु निगरानी प्रणालियों को विकसित करने और कार्यान्वित करने की प्राथमिकता देने की आवश्यकता होगी।

पीएमयू, एनसीईआरटी, एनआईईपीए और अन्य विश्वविद्यालयों के अलावा, राष्ट्रीय स्तर पर, शोध संस्थानों और गैर–सरकारी संगठनों को बुनियादी अधिगम से संबंधित अनुसंधान परियोजनाओं में शामिल किया जाना चाहिए। राज्यों में, एससीईआरटी, डाइट, विश्वविद्यालयों और राज्य अनुसंधान संस्थानों की भागीदारी को बुनियादी अधिगम के लिए प्रासंगिक मुद्दों पर अनुसंधान करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि अनुसंधान के निष्कर्षों को व्यापक रूप से प्रसारित किया जाता है और विभिन्न कार्यकलापों की आयोजना और सुधार में उपयोग किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम के क्रियान्वयन के दौरान विविध पहलों को समझने के क्रम में, कक्षाओं में अपनाई जा रही विभिन्न नवाचारी क्रियाकलापों और रुचिकर शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यव्यवहारों, शिक्षकों और शैक्षणिक संसाधन व्यक्तियों का क्षमता–निर्माण माता–पिता और सामुदायिक सदस्यों की भूमिका, छात्र–अधिगम का आंकलन, जागरूकता अभियानों आदि को शामिल करके विभिन्न प्रक्रियाओं और कार्यव्यवहारों का प्रलेखन किया जाना चाहिए। कार्यक्रम की सफलताओं का दस्तावेजीकरण करते समय, यह रिकॉर्ड करना भी महत्वपूर्ण है कि क्या काम नहीं हुआ और क्यों, ताकि बेहतर समझ के लिए अनुभव से मिली सीख को संग्रहीत किया जा सके।

Rajasthan Education Department

लक्ष्य सूची

बालवाटिका या आयु 5–6

मौखिक भाषा

1. दोस्तों और शिक्षकों से बात करना।
2. समझ के साथ तुकांत / कविताएँ गाना।

पढ़ना

1. किताबों को देखना और चित्रों की मदद से कहानी पढ़ने का प्रयास करना।
2. कुछ परिचित दोहराए गए शब्दों को पहचानने और इंगित करने की शुरुआत करना (दृष्टि शब्दों या खाद्य कंटेनर/ रैपर पर छपे शब्द)।
3. अक्षरों और संगत ध्वनियों को पहचानना।
4. कम से कम दो अक्षर वाले सरल शब्दों को पढ़ना

लेखन

1. खेल के दौरान पहचान वाले अक्षरों को लिखने का प्रयास करना।
2. आत्म अभिव्यक्ति के लिए पेंसिल घसीटना या चित्र बनाना।
3. पेंसिल को ठीक से पकड़ना और पहचानने योग्य अक्षर बनाने के लिए उपयोग करना
4. अपने पहले नाम को पहचानना और लिखना

संख्यात्मक

1. वस्तुओं की गिनती और 10 तक संख्याओं को सहसंबंधित करना।
2. 10 तक के अंकों को पहचानना और पढ़ना।
3. वस्तुओं की संख्या के संदर्भ में दो समूहों की तुलना करना और अधिक / कम / बराबर आदि जैसे शब्दों का उपयोग करना।
4. एक क्रम में घटनाओं की संख्या / वस्तुओं / आकृतियों / घटनाओं को व्यवस्थित करना
5. वस्तुओं को उनकी अवलोकनीय विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करना और वर्गीकरण के मानदंड का संचार करना
6. अपने चारों ओर कि विभिन्न वस्तुओं के संदर्भ में तुलनात्मक शब्दों का उपयोग करना, जैसे लंबे, सबसे लंबे, सबसे छोटे, से अधिक, हल्के, आदि।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

कक्षा 1 या आयु 6–7

मौखिक भाषा

1. अपनी जरूरतों, परिवेश के बारे में दोस्तों और कक्षा शिक्षक के साथ बातचीत करना।
2. कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री के बारे में बात करना।
3. कविताओं / गीतों को एक्शन के साथ सुनाना।

पढ़ना

1. सक्रिय तरीके से जोर से कहानी कहने के सत्र के दौरान भाग लेना तथा कहानी सत्र के दौरान और बाद में सवालों का जवाब देना; कठपुतलियों और अन्य सामग्रियों के साथ परिचित कहानी का अभिनय करना।
2. आविष्कृत वर्तनी के साथ शब्द लिखने के लिए ध्वनि प्रतीक का उपयोग करना।
3. आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ में कम से कम 4–5 सरल शब्द सहित छोटे–छोटे वाक्य पढ़ना

लेखन

1. परिचित संदर्भों (कहानी / कविता / पर्यावरण प्रिंट आदि) में प्रयोग होने वाले शब्दों में मात्राओं के साथ परिचित होना।

	2. लेखन, ड्राइंग, और / या चीजों को अर्थ देना और अपने कार्यपत्र, बधाई संदेश, चित्रों, आदि पर अपना नाम लिखना और ऐसे चित्र बनाना जो पहचानने योग्य हों या अन्य लोगों से मेल खाते हों।
संख्यात्मक	1. 20 तक वस्तुओं की गिनती 2. 99 तक की संख्या पढ़ना और लिखना 3. दैनिक जीवन स्थितियों में 9 तक संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करना। 4. अपने चारों ओर 3 डी आकृतियों (ठोस आकृतियों) के भौतिक गुणों का अवलोकन और वर्णन करना / जैसे गोल / समतल सतह, कोनों और किनारों की संख्या आदि। 5. गैर–मानक गैर–समान इकाइयों जैसे हाथ की अवधि, पैर की लम्बाई, उंगलियों आदि का उपयोग करके लंबाई का अनुमान लगाना और पुष्टि करना और गैर–मानक वर्दी इकाइयों जैसे कप, चम्मच, मग आदि का उपयोग करने की क्षमता रखना। 6. आकार और संख्याओं का उपयोग करके छोटी कविताओं और कहानियों का निर्माण और पाठ करना।
कक्षा 2 या आयु 7–8	
मौखिक भाषा	1. कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री के बारे में बात करना। 2. प्रश्न पूछने के लिए बातचीत में संलग्न होना और दूसरों को सुनना 3. गीत / कविताएँ सुनाना। 4. कहानियों / कविताओं / प्रिंट आदि में होने वाले परिचित शब्दों को दोहराना
पढ़ना	1. बच्चों के साहित्य / पाठ्यपुस्तक से कहानियों को पढ़ना / वर्णन करना / फिर से बताना। 2. किसी दिए गए शब्द के अक्षरों से नए शब्द बनाना। 3. आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ से उचित गति और स्पष्टता के साथ सरल शब्दों के 8–10 वाक्यों को पढ़ना (लगभग 45 से 60 शब्द प्रति मिनट सही ढंग से)।
लेखन	1. खुद को व्यक्त करने के लिए छोटे / सरल वाक्य को सही ढंग से लिखना। 2. नामकरण शब्द, क्रिया शब्द और विराम चिह्नों को पहचानना।
संख्यात्मक	1. 999 तक संख्या पढ़ना और लिखना। 2. 99 तक की संख्याओं को जोड़ना और घटाना, दैनिक जीवन स्थितियों में 99 तक की वस्तुओं का योग। 3. गुणा और जोड़ को समान वितरण / बंटवारे के रूप में गुणा करना और 2, 3 और 4 के गुणन तथ्यों (तालिकाओं) का निर्माण करना। 4. गैर–मानक वर्दी इकाइयों जैसे रॉड, पेंसिल, धागा, कप, चम्मच, मग आदि का उपयोग करके लंबाई / दूरी / क्षमता का अनुमान लगाना और मापना और सरल संतुलन का उपयोग करके वजन की तुलना करना 5. आयत, त्रिभुज, वृत्त, अंडाकार आदि जैसे 2–डी आकृतियों की पहचान करना और उनका वर्णन करना।.

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

	6. दूर / पास, अंदर / बाहर, ऊपर / नीचे, बाएँ / दाएँ, आगे / पीछे, आदि जैसे स्थानिक शब्दावली का उपयोग करना। 7. संख्याओं और आकृतियों का उपयोग करके सरल पहेलियों को बनाना और हल करना।
कक्षा 3 या आयु 8–9	
मौखिक भाषा	1. घर / स्कूल में उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करके स्पष्टता के साथ बातचीत करना। 2. कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री के बारे में बात करना। 3. सवाल पूछने, अनुभव बताने, दूसरों को सुनने और जवाब देने के लिए बातचीत में हिस्सा लेना। 4. कविताओं को व्यक्तिगत रूप से और समूह में आवाज़ का उतार–चढ़ाव और आवाज़ बदल कर सुनना।
पढ़ना	1. परिचित पुस्तकों / पाठ्य पुस्तकों में जानकारी प्राप्त करना। 2. भाषा के आधार पर और एक आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ से सही उच्चारण के साथ लगभग 60 शब्द प्रति मिनट की इष्टतम गति के साथ पढ़ना। 3. पाठ में दिए गए निर्देशों को पढ़ना और उनका पालन करना। 4. आयु उपयुक्त अज्ञात कहानी / 8–10 वाक्यों के अनुच्छेद को पढ़के 4 में से कम से कम 3 प्रश्नों का उत्तर दे सके।
लेखन	1. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लघु संदेश लिखना। 2. लिखने के लिए क्रिया शब्दों, नामकरण और विराम चिह्नों का उपयोग करना। 3. व्याकरणिक रूप से सही वाक्य लिखना। 4. व्याकरणिक रूप से सही वाक्यों का प्रयोग कर के खुद छोटे पैराग्राफ और छोटी कहानियां लिखना।
संख्यात्मक	1. 9999 तक संख्या पढ़ना और लिखना। 2. 999 तक की संख्याओं को जोड़ना और घटाना, दैनिक जीवन स्थितियों में 999 तक की वस्तुओं का योग। 3. 2 से 10 की संख्या के गुणन तथ्यों (तालिकाओं) का निर्माण और उपयोग करना और विभाजन तथ्यों का उपयोग करना। 4. मानक इकाइयों, जैसे मीटर, किमी, ग्राम, किग्रा, लीटर आदि का उपयोग करके लंबाई / दूरी, वजन और क्षमता का अनुमान लगाना और मापना। 5. 3 डी आकृतियों (ठोस आकृतियों) के साथ मूल 2 डी आकृतियों की पहचान करना और संबंधित करना और उनके गुणों जैसे चेहरे, किनारों और कोनों आदि की संख्या का वर्णन करना। 6. किसी तिथि और दिन कि कैलेंडर पर पहचान करना ; घंटे और आधे घंटे में घड़ी पर समय पढ़ना। 7. आधा, एक–चौथाई, एक पूरे के तीन–चौथाई और वस्तुओं के संग्रह में पहचान करना। 8. संख्याओं, घटनाओं और आकारों पर सरल पैटर्न के लिए नियमों की पहचान करना, विस्तार करना, और संवाद करना।

Rajasthan Education Department

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

Rajasthan Education Department

Concept & Design by Nirman Advertising Pvt. Ltd., # 9811043192

सत्यमेव जयते

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार